International Insights
JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH
(IIJMR)

ISSN
3049-0847
Vol. 3 | Issue 3
2026

www.insightresearch.org.in ◆ insightresearch.org@gmail.com ◆ Peer Reviewed & Refereed Journal

[भारत में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव]

Dr. AfroZ Alam

MA, PHD

ABSTRACT

भारत में जलवायु परिवर्तन अब कोई दूर की चेतावनी नहीं, बल्कि वर्तमान की कठोर वास्तविकता बन चुका है, जो करोड़ों भारतीयों की रोजमर्रा की जिंदगी, आजीविका और सपनों को गहराई से झकझोर रहा है। वर्ष 2025 ने इस संकट की तीव्रता को नया आयाम दिया। जनवरी से नवंबर तक देश के 99 प्रतिशत दिनों में चरम मौसम घटनाएं दर्ज की गईं, जिनमें 4,419 मौतें हुईं और 1.74 करोड़ हेक्टेयर फसल क्षेत्र प्रभावित हुआ। 2024 देश का सबसे गर्म वर्ष रहा, जहां औसत तापमान सामान्य से ऊपर रहा और लू की लहरों ने श्रम घंटों में भारी नुकसान पहुंचाया। कल्पना कीजिए बिहार के एक छोटे किसान की, जो गंगा के किनारे खेती करता है, एक साल बाढ़ से सारी फसल बह जाती है, दूसरे साल सूखे और लू से बीज नहीं अंकुराते। गर्मी, अनियमित मानसून, सूखा और बाढ़ का यह चक्र परिवारों को बार–बार गरीबी की खाई में धकेल रहा है। कृषि पर निर्भर 58 प्रतिशत आबादी सबसे अधिक प्रभावित है। बढ़ते तापमान ने गेहूं–चावल जैसी फसलों की पैदावार घटाई है, जबकि कीट प्रकोप और मिट्टी की उर्वरता ह्रास ने खाद्य सुरक्षा को चुनौती दी है। जल संसाधनों का संकट गहराया है, हिमालयी ग्लेशियर पिघल रहे हैं, नदियां अनियमित हो रही हैं और भूजल स्तर गिर रहा है। तटीय क्षेत्रों में समुद्र स्तर वृद्धि और चक्रवात मुंबई, कोलकाता जैसे शहरों तथा लाखों मछुआरों की आजीविका को खतरे में डाल रहे हैं। स्वास्थ्य पर असर भी गंभीर है, हीट स्ट्रोक, जलजनित रोग और वायु प्रदूषण ने लाखों लोगों की जीवन प्रत्याशा प्रभावित की है।

सबसे दर्दनाक यह है कि गरीब, महिलाएं, बच्चे, दलित और आदिवासी समुदाय इस बोझ का सबसे बड़ा हिस्सा उठा रहे हैं। 2025 में लाखों लोग विस्थापित हुए, परिवार टूटे और युवा रोजगार की तलाश में शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। जलवायु परिवर्तन ने सामाजिक असमानता को बढ़ाया है और आर्थिक विकास को भी धीमा किया है। फिर भी, यह संकट मानवीय लचीलापन की परीक्षा भी है, किसान नई तकनीकें अपनाकर, समुदाय सामूहिक प्रयासों से और नीति–निर्माता अनुकूलन रणनीतियों से इस चुनौती का सामना कर रहे हैं। सारांश में, भारत में जलवायु परिवर्तन का प्रभाव बहुआयामी है, जो पर्यावरण, अर्थव्यवस्था और समाज की बुनियाद को हिला रहा है, लेकिन साथ ही यह तत्काल और सशक्त कार्रवाई की पुकार भी है।

KEYWORDS : पर्यावरण, अर्थव्यवस्था, भौगोलिक, हिमालय, वैश्विक, तीव्रता, वैश्विक संकट ।

Received	Accepted	Published	Article Type
25/05/2026	01/08/2026	08/08/2026	Research Paper

© 2026 IIJMR | All Rights Reserved
www.insightresearch.org.in

Vol. 3, Issue 3, July-September 2026
doi.org/10.5281/zenodo.21858533

International Insights
JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH
(IIJMR)
ISSN
3049-0847
Vol. 3 | Issue 3
2026

www.insightresearch.org.in ◆ insightresearch.org@gmail.com ◆ Peer Reviewed & Refereed Journal

परिचय

भारत में जलवायु परिवर्तन के प्रभावों की चर्चा करना मात्र वैज्ञानिक आंकड़ों का विश्लेषण नहीं, बल्कि करोड़ों भारतीयों की जीवित कहानियों को समझना है, जिनकी जिंदगी इस बदलते मौसम के साथ निरंतर संघर्ष कर रही है। विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र और विविध भौगोलिक संरचना वाले देश के रूप में भारत जलवायु परिवर्तन के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है। हिमालय से लेकर हिंद महासागर तक, रेगिस्तान से घने जंगलों तक देश की हर इकाई इस वैश्विक संकट का प्रत्यक्ष शिकार बन रही है। बढ़ते ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन, मानव गतिविधियां और प्राकृतिक चक्रों में बदलाव ने यहां तापमान वृद्धि, अनियमित वर्षा और चरम मौसम घटनाओं को आम बना दिया है। 2024–2025 के वर्षों ने इस संकट को और स्पष्ट किया। देश का औसत तापमान बढ़ रहा है, लू की लहरें लंबी और तीव्र हो रही हैं, जबकि मानसून कभी देर से आता है तो कभी अचानक विनाशकारी बाढ़ लाता है। बिहार जैसे राज्य, जहां कृषि अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, हर वर्ष बाढ़–सूखे के दोहरे हमले से जूझते हैं। कल्पना कीजिए एक ग्रामीण महिला की, जो सुबह से शाम पानी और चारा जुटाने में लगी रहती है, लेकिन जलवायु अनिश्चितता ने उसके प्रयासों को व्यर्थ कर दिया है। छोटे किसान, दिहाड़ी मजदूर, मछुआरे और आदिवासी समुदाय ये वे लोग हैं जो सबसे कम उत्सर्जन करते हैं, फिर भी सबसे अधिक पीड़ित हैं।

जलवायु परिवर्तन यहां केवल पर्यावरणीय मुद्दा नहीं, बल्कि विकास, समानता और मानवीय गरिमा का प्रश्न है। यह खाद्य सुरक्षा, जल उपलब्धता, स्वास्थ्य और आजीविका को प्रभावित कर राष्ट्रीय प्रगति को चुनौती दे रहा है। फिर भी, भारत की प्राचीन परंपराओं में निहित प्रकृति के साथ सामंजस्य की भावना आज भी जीवित है। किसान पीढ़ी दर पीढ़ी मौसम पढ़ते आए हैं, समुदाय सामूहिक रूप से आपदाओं का सामना करते हैं। इस परिचय में हम समझते हैं कि भारत न केवल संकट का सामना कर रहा है, बल्कि अनुकूलन और शमन की नई राहें भी दिखा रहा है। जलवायु परिवर्तन की इस यात्रा में हर भारतीय की कहानी महत्वपूर्ण है, यह कहानी पीड़ा की है, लेकिन आशा और संकल्प की भी। भारत में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के प्रमुख कारक :–

1. तापमान वृद्धि और लू की लहरें

भारत में जलवायु परिवर्तन सबसे पहले और सबसे कठोर रूप से तापमान वृद्धि के रूप में प्रकट होता है, जो लाखों भारतीयों की दैनिक जिंदगी को गहराई से प्रभावित कर रहा है। 2024 को देश का सबसे गर्म वर्ष दर्ज किया गया, जिसमें औसत तापमान सामान्य से 0.65 डिग्री सेल्सियस ऊपर रहा और दिल्ली में 49.9 डिग्री सेल्सियस का रिकॉर्ड टूटा। जलवायु परिवर्तन ने 2024 में लू के दिनों का एक–तिहाई हिस्सा पैदा किया, जिससे औसतन 19.8 लू के दिन दर्ज किए गए, इनमें से 6.6 दिन बिना मानवीय हस्तक्षेप के नहीं होते। कल्पना कीजिए बिहार के एक छोटे किसान या निर्माण मजदूर की, जो सुबह 4 बजे काम पर निकलता है, लेकिन दोपहर तक गर्मी इतनी बढ़ जाती है कि शरीर थकान और निर्जलीकरण से जूझने लगता है। 75 प्रतिशत कार्यबल गर्मी के संपर्क में है, जिससे 2024 में 247 अरब संभावित श्रम घंटे खो गए मुख्यतः कृषि और निर्माण क्षेत्र में जिसका आर्थिक नुकसान लगभग 194 अरब डॉलर का था। यह केवल आंकड़े नहीं, बल्कि मानवीय पीड़ा है। बुजुर्ग, बच्चे और गर्भवती महिलाएं सबसे अधिक प्रभावित हैंय 2024 में सरकारी आंकड़ों के अनुसार 459 से 733 तक गर्मी से संबंधित मौतें हुईं, जबकि अनौपचारिक अनुमान इससे कहीं अधिक हैं। शहरी स्लमों में रहने वाले गरीब परिवारों के लिए बिजली कटौती और पानी की कमी के साथ यह संकट और गहरा हो जाता है। ग्रामीण भारत में, जहां 58 प्रतिशत आबादी कृषि पर निर्भर है, लू फसलों को सूखा देती है और पशुधन को मारती है, जिससे परिवार की आय और भोजन सुरक्षा दोनों खतरे में पड़ जाते हैं। जलवायु परिवर्तन ने लू की तीव्रता और आवृत्ति बढ़ा दी है, जिससे 2030 तक 3.4 करोड़ नौकरियां प्रभावित होने का अनुमान है। यह प्रभाव न केवल शारीरिक स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाता है, बल्कि मानसिक तनाव, उत्पादकता ह्रास और सामाजिक असमानता को बढ़ावा देता है। गरीब और हाशिए पर रहने वाले समुदाय, विशेषकर उत्तर भारत के मैदानी इलाकों में, इस बदलते मौसम का सबसे अधिक बोझ उठा रहे हैं, जहां हर गर्म दिन जीवन की नाजुकता की याद दिलाता है।

2. अनियमित वर्षा, बाढ़ और सूखा

जलवायु परिवर्तन ने भारत के मानसून पैटर्न को बिगाड़ दिया है, जिससे वर्षा अनियमित, अत्यधिक या अपर्याप्त हो गई है, यह उन करोड़ों परिवारों के लिए एक निरंतर संकट है जो वर्षा पर निर्भर रहते हैं। 2024–2025 में देश के 99 प्रतिशत दिनों में चरम मौसम घटनाएं दर्ज की गईं, जिसमें बाढ़, भारी बारिश और सूखे ने 4,419 मौतें और 1.74 करोड़ हेक्टेयर फसल क्षेत्र को प्रभावित किया। बिहार जैसे राज्यों में गंगा के मैदानी इलाकों के किसान हर वर्ष बाढ़ से जूझते हैं, जहां नदियां उफान पर आकर घर, फसलें और पशुधन बहा ले जाती हैं, फिर सूखे के मौसम में पानी की कमी से खेत सूख जाते हैं। यह चक्र परिवारों को बार–बार गरीबी की ओर धकेलता है।

© 2026 IIJMR | All Rights Reserved
www.insightresearch.org.in

Vol. 3, Issue 3, July-September 2026
doi.org/10.5281/zenodo.21858533

International Insights
JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH
(IIJMR)
ISSN
3049-0847
Vol. 3 | Issue 3
2026

www.insightresearch.org.in ◆ insightresearch.org@gmail.com ◆ Peer Reviewed & Refereed Journal

मानसून की अनियमितता ने पारंपरिक कृषि चक्र को बाधित कर दिया है। दक्षिण–पश्चिम मानसून कभी देर से आता है, कभी अचानक भारी बारिश लाता है, जिससे फसलें या तो डूब जाती हैं या सूख जाती हैं। 2025 में चरम घटनाओं ने 17.41 मिलियन हेक्टेयर भूमि को नुकसान पहुंचाया। तटीय और पहाड़ी क्षेत्रों में चक्रवात और भूस्खलन बढ़ गए हैं, जबकि उत्तर भारत में सूखा पानी के स्रोतों को सूखा रहा है। लाखों लोग हर साल अपने घर छोड़ने को मजबूर होते हैं, 2024 में भारत में 5.4 मिलियन आंतरिक विस्थापन जलवायु से जुड़े थे। यह प्रभाव सबसे अधिक गरीब महिलाओं और बच्चों पर पड़ता है, जो पानी और भोजन जुटाने के लिए घंटों खर्च करती हैं। ग्रामीण समुदायों में, जहां कृषि एकमात्र आजीविका है, यह अनिश्चितता मानसिक स्वास्थ्य को चोट पहुंचाती है और युवाओं को शहरों की ओर पलायन करने पर मजबूर करती है। जलवायु परिवर्तन ने इन घटनाओं की तीव्रता बढ़ा दी है, जिससे प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ा है और सामाजिक सद्भाव प्रभावित हुआ है। हर बाढ़ या सूखा न केवल संपत्ति का नुकसान करता है, बल्कि आशा और स्थिरता को भी छीन लेता है, जिससे पूरे समुदाय की लचीलापन कम हो जाता है।

3. कृषि और खाद्य सुरक्षा पर प्रभाव

भारत की 60 प्रतिशत से अधिक कृषि वर्षा–आधारित है, और जलवायु परिवर्तन ने इस आधार को ही हिला दिया है, जिससे करोड़ों किसान परिवारों की आजीविका और देश की खाद्य सुरक्षा खतरे में पड़ गई है। गेहूं, चावल और मक्का जैसी प्रमुख फसलों की पैदावार में 2050 तक 18–20 प्रतिशत की गिरावट का अनुमान है, क्योंकि बढ़ते तापमान और अनियमित बारिश फसलों के विकास चक्र को बिगाड़ रहे हैं। 2024–2025 में चरम मौसम ने लाखों हेक्टेयर फसलें नष्ट कीं, पशुधन मारा और कीट–पतंगों के प्रकोप को बढ़ावा दिया। बिहार के छोटे किसान, जो गंगा के किनारे खेती करते हैं, अब हर सीजन में अनिश्चितता का सामना करते हैं, एक साल बाढ़ से सब कुछ बह जाता है, दूसरे साल सूखे से बीज नहीं अंकुराते। यह केवल आर्थिक नुकसान नहीं, बल्कि मानवीय संघर्ष है। छोटे और सीमांत किसान, जो देश की 80 प्रतिशत कृषि भूमि संभालते हैं, कर्ज में डूब जाते हैं, परिवार भोजन की कमी से जूझते हैं और बच्चों की शिक्षा छूट जाती है। जलवायु परिवर्तन ने मिट्टी की उर्वरता घटाई है, पानी की उपलब्धता कम की है और नई बीमारियों को आमंत्रित किया है। परिणामस्वरूप, खाद्य असुरक्षा बढ़ रही है, 2025 के आंकड़ों में सूखा और बाढ़ ने लाखों लोगों को प्रभावित किया। शहरी गरीब भी प्रभावित हैं, क्योंकि फसल नुकसान से कीमतें बढ़ती हैं और पोषण स्तर गिरता है। कृषि क्षेत्र की यह कमजोरी पूरे समाज को प्रभावित करती है। जहां महिलाएं खेतों में सबसे अधिक काम करती हैं, वहां गर्मी और पानी की कमी उनके स्वास्थ्य और उत्पादकता दोनों को नुकसान पहुंचाती है। जलवायु परिवर्तन ने पारंपरिक ज्ञान को अप्रासंगिक बना दिया है, जिससे किसान नई चुनौतियों का सामना करने में असहाय महसूस करते हैं। यह प्रभाव दीर्घकालिक है, क्योंकि मिट्टी की क्षति और जलवायु अनिश्चितता भविष्य की पीढ़ियों की खाद्य सुरक्षा को खतरे में डाल रही है। भारत जैसे कृषि–प्रधान देश में यह संकट न केवल स्थानीय है, बल्कि राष्ट्रीय विकास की नींव को हिला रहा है।

4. जल संसाधनों पर प्रभाव

जलवायु परिवर्तन भारत के जल चक्र को मौलिक रूप से बदल रहा है, जिससे नदियां, झीलें और भूजल स्रोत प्रभावित हो रहे हैं, यह उन लाखों परिवारों के लिए अस्तित्व का प्रश्न बन गया है जो इन पर निर्भर हैं। हिमालयी ग्लेशियरों का पिघलना शुरूआती वर्षों में नदियों में पानी बढ़ा रहा है, लेकिन लंबे समय में यह कमी ला रहा है। गंगा और यमुना जैसी प्रमुख नदियों में प्रवाह अनियमित हो गया है, जिससे बिहार और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में बाढ़ और सूखे दोनों बढ़ गए हैं। 2025 में पानी की कमी और प्रदूषण ने 52 प्रतिशत भारतीयों को प्रभावित किया, जबकि मेगालय जैसे क्षेत्रों में संकट गहराया। कल्पना कीजिए एक गांव की महिलाओं की, जो घंटों पानी की तलाश में भटकती हैं क्योंकि भूजल स्तर गिर गया है। वर्षा की अनियमितता ने रेन–फेड क्षेत्रों में सूखा बढ़ाया है, जबकि भारी बारिश ने भूजल को दूषित कर दिया है। तटीय क्षेत्रों में समुद्री जल का घुसपैठ मीठे पानी को खारा बना रहा है। यह प्रभाव कृषि, पीने के पानी और उद्योग सभी को छू रहा है। 2024 में दिल्ली जैसी राजधानियों में पानी की कटौती आम हो गई, जिससे लाखों नागरिक प्रभावित हुए। जल संकट सबसे गरीब और हाशिए वाले समुदायों आदिवासी, दलित और ग्रामीण महिलाओं को सबसे अधिक प्रभावित करता है। यह स्वास्थ्य संकट पैदा करता है, क्योंकि दूषित पानी से जलजनित बीमारियां बढ़ रही हैं। जलवायु परिवर्तन ने जल विवादों को भी बढ़ावा दिया है, जिससे सामाजिक तनाव बढ़ा है। दीर्घकाल में, यह खाद्य उत्पादन और ऊर्जा सुरक्षा दोनों को खतरे में डाल रहा है। भारत में जल संसाधनों का यह ह्रास न केवल पर्यावरणीय है, बल्कि मानवीय गरिमा और विकास के अधिकार को चुनौती दे रहा है, जहां हर सूखा दिन उम्मीद को कमजोर करता है।

5. तटीय क्षेत्रों और समुद्र स्तर वृद्धि पर प्रभाव

© 2026 IIJMR | All Rights Reserved
www.insightresearch.org.in

Vol. 3, Issue 3, July-September 2026
doi.org/10.5281/zenodo.21858533

International Insights
JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH
(IIJMR)
I S S N
3049-0847
Vol. 3 | Issue 3
2026

www.insightresearch.org.in ◆ insightresearch.org@gmail.com ◆ Peer Reviewed & Refereed Journal

समुद्र स्तर की वृद्धि और चरम मौसम घटनाएं भारत के 7,500 किलोमीटर लंबे तटीय क्षेत्र को गंभीर खतरे में डाल रही हैं, जहां लाखों लोग अपनी जमीन, घर और आजीविका खो रहे हैं। मुंबई और कोलकाता जैसे महानगरों को उच्च बाढ़ जोखिम का सामना है, जबकि 2050 तक कई मिलियन भारतीय समुद्री जल से प्रभावित होने वाले हैं। चक्रवातों की तीव्रता बढ़ने से तटीय समुदाय मछुआरे, किसान और छोटे व्यापारी हर वर्ष भारी नुकसान उठाते हैं। 2024–2025 में चरम घटनाओं ने तटीय बाढ़ बढ़ाई, जिससे नमक पानी की घुसपैठ ने खेती योग्य भूमि को बर्बाद किया। सुंदरबन या गुजरात के तटीय गांवों के निवासियों की कल्पना कीजिए, जिनके घर बार–बार समुद्र की चपेट में आते हैं। महिलाएं और बच्चे सबसे अधिक प्रभावित हैं, क्योंकि वे घर और परिवार की देखभाल करती हैं। समुद्र स्तर वृद्धि ने मछली पकड़ने को प्रभावित किया है, जिससे आय में कमी आई है और पलायन बढ़ा है। यह प्रभाव जैव विविधता को भी नुकसान पहुंचा रहा है, कोरल रीफ्स मर रहे हैं और मैंग्रोव घट रहे हैं, जो प्राकृतिक सुरक्षा कवच थे। तटीय प्रभाव आर्थिक और सामाजिक रूप से विनाशकारी हैं। लाखों लोग विस्थापित हो रहे हैं, जो शहरी गरीबी बढ़ा रहे हैं। जलवायु परिवर्तन ने इन क्षेत्रों को सबसे कमजोर बना दिया है, जहां हर चक्रवात न केवल संपत्ति बल्कि सांस्कृतिक विरासत और समुदाय की एकता को भी छीन लेता है। यह संकट राष्ट्रीय स्तर पर प्रवासन और संसाधनों पर दबाव बढ़ा रहा है, जो विकास की राह में बाधा बन रहा है।

6. स्वास्थ्य, जैव विविधता और सामाजिक–आर्थिक प्रभाव

जलवायु परिवर्तन भारत में स्वास्थ्य, जैव विविधता और अर्थव्यवस्था को गहराई से प्रभावित कर रहा है, जो करोड़ों लोगों की भलाई और देश के विकास को चुनौती दे रहा है। बढ़ती गर्मी, प्रदूषण और बीमारियों के प्रसार ने स्वास्थ्य बोझ बढ़ाया है, हीट स्ट्रोक, मलेरिया और जलजनित रोगों में वृद्धि हुई है। 2024 में गर्मी से श्रम घंटों का नुकसान स्वास्थ्य सेवाओं पर दबाव बढ़ा रहा है। जैव विविधता ह्रास हो रही हैरू वन्यजीव संघर्ष बढ़ा है, प्रजातियां विलुप्त हो रही हैं और पारिस्थितिकी तंत्र बिगड़ रहे हैं। सामाजिक–आर्थिक रूप से, यह असमानता बढ़ा रहा है। गरीब, दलित और आदिवासी समुदाय सबसे अधिक प्रभावित हैं, उनकी आय घट रही है, शिक्षा और स्वास्थ्य प्रभावित हो रहे हैं। 2100 तक जीडीपी में 6–10 प्रतिशत की हानि का अनुमान है, जबकि 50 मिलियन लोग गरीबी में वापस धकेले जा सकते हैं। बिहार जैसे राज्यों में बाढ़ और सूखा प्रवासन बढ़ा रहे हैं। यह प्रभाव मानवीय लचीलापन की परीक्षा ले रहा है। परिवार अपनी परंपराओं और सपनों से जुड़े रहते हुए संघर्ष कर रहे हैं, लेकिन हर आपदा उन्हें कमजोर कर रही है। जलवायु परिवर्तन ने स्वास्थ्य, पर्यावरण और अर्थव्यवस्था के बीच गहरे संबंध को उजागर किया है, जहां एक क्षेत्र का नुकसान दूसरे को प्रभावित करता है। यह संकट न केवल वर्तमान पीढ़ी बल्कि आने वाली पीढ़ियों की विरासत को भी खतरे में डाल रहा है।

निष्कर्ष

भारत में जलवायु परिवर्तन का प्रभाव अब कोई सैद्धांतिक चर्चा नहीं, बल्कि करोड़ों भारतीयों की रोजमर्रा की पीड़ा, संघर्ष और आशा की कहानी बन चुका है। बिहार के गंगा–किनारे के किसान से लेकर मुंबई के तटीय मछुआरे तक, हर परिवार इस बदलते मौसम की मार झेल रहा है। बढ़ती लू, अनियमित मानसून, बाढ़–सूखे का चक्र, जल संकट और समुद्र स्तर की वृद्धि ने न केवल फसलों, घरों और आजीविका को नष्ट किया है, बल्कि स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक संरचना को भी गहराई से झकझोर दिया है। 2025 के आंकड़े स्पष्ट करते हैं कि चरम मौसम घटनाओं ने हजारों जानें लीं, लाखों हेक्टेयर भूमि बर्बाद की और करोड़ों लोगों को विस्थापित किया। सबसे अधिक प्रभावित वे हैं जो सबसे कम जिम्मेदार हैंकृछोटे किसान, ग्रामीण महिलाएं, बच्चे, दलित और आदिवासी समुदाय।

यह संकट केवल पर्यावरणीय नहीं, बल्कि मानवीय गरिमा और विकास का प्रश्न है। हर गर्म दिन जो श्रम घंटे छीनता है, हर बाढ़ जो सपनों को बहा ले जाती है, हर सूखा जो भोजन की थाली खाली करता है, ये सब हमें याद दिलाते हैं कि जलवायु परिवर्तन असमानता को और गहरा कर रहा है। फिर भी, भारत की मिट्टी में निहित लचीलापन अभी भी जीवित है। किसान नई फसलें और पानी बचाने की तकनीकें अपनाकर, समुदाय आपसी सहयोग से और परिवार अपनी हिम्मत से इस चुनौती का सामना कर रहे हैं। जलवायु परिवर्तन भारत की सभ्यता, अर्थव्यवस्था और समाज की बुनियाद को हिला रहा है, लेकिन यह हमें एकजुट होने, प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाने और दीर्घकालिक सोच अपनाने का अवसर भी दे रहा है। हर भारतीय की कहानी अब इस संकट की नहीं, बल्कि उसके समाधान की भी होनी चाहिएकृताकि आने वाली पीढ़ियां सपनों के साथ जी सकें, न कि केवल संघर्ष के साथ।

© 2026 IIJMR | All Rights Reserved
www.insightresearch.org.in

Vol. 3, Issue 3, July-September 2026
doi.org/10.5281/zenodo.21858533

International Insights
JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH
(IIJMR)
I S S N
3049-0847
Vol. 3 | Issue 3
2026

www.insightresearch.org.in ◆ insightresearch.org@gmail.com ◆ Peer Reviewed & Refereed Journal

संदर्भ सूची :–

1. Dubash, N. K. (Ed.). (2012). Handbook of climate change and India: Development, politics and governance. Oxford University Press.
2. Dubash, N. K. (Ed.). (2019). India in a warming world: How to couple climate change and development. Oxford University Press.
3. Dutt, B. (2010). Green wars: Reports out of a disappearing world. HarperCollins India.
4. Ghosh, A. (2016). The great derangement: Climate change and the unthinkable. Penguin Books India.
5. Guha, R. (2014). Environmentalism: A world history. Allen Lane (Penguin random house India).
6. Kashwan, P. (Ed.). (2022). India: Climate justice (Vol. 1). Cambridge University Press.
7. Lal, P. (2016). Indica: A profound natural history of the Indian subcontinent. Penguin random house India.
8. Mehta, L., Adam, H. N., & Srivastava, S. (Eds.). (2022). Politics of climate change and uncertainty in India. Routledge.
9. Nagendra, H., & Mundoli, S. (2022). Cities and canopies: Trees in Indian cities. Penguin Viking.
10. Narain, S. (2022). Conflicts of interest: The experience of my trip through the green movement in India. Penguin Viking.
11. Pande, C. B. (Ed.). (2023). The effects of climate change in India. Springer.
12. Ramesh, M. (2019). The climate solution: climate change crisis in India and what we can do about it. Hachette India.
13. Rani, S., Kumar, R., & Maharana, P. (Eds.). (2022). Climate change: Responses and sustainability of the Indian Himalaya. Springer.
14. Sahai, S. (Ed.). (2012). Climate change. Gene Campaign.
15. Sekhsaria, P. (2017). Islands in flux: Andaman and Nicobar story. HarperLitmus.
16. Shanker, K. (2019). Soup to superstar: The history of conserving sea turtles along the Indian coast. HarperCollins India.
17. Singh, S. (2019). The Indian great smog. Penguin Viking.
18. Subramanian, M. (2015). Another river flows: The natural world of India in crisis, into the barren cliffs of Rajasthan, to the farmlands of Karnataka. PublicAffairs (Hachette India edition).
19. Viju, B. (2021). Flood and fury: Ecological devastation in the Western Ghats. Penguin eBury Press.
20. Vachharajani, B. (2023). Great Indian nature trail.

© 2026 IIJMR | All Rights Reserved
www.insightresearch.org.in

Vol. 3, Issue 3, July-September 2026
doi.org/10.5281/zenodo.21858533